Research Papers published

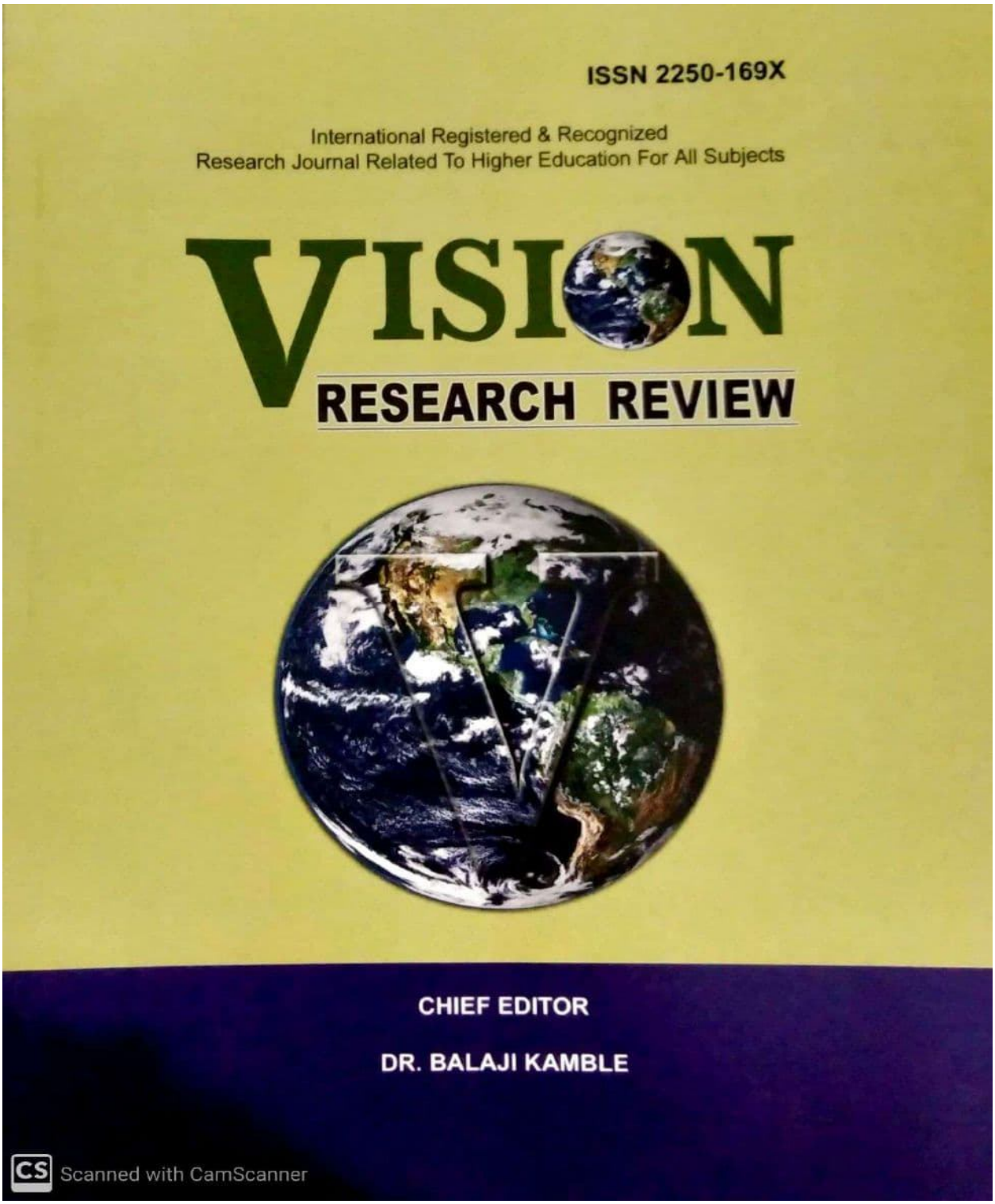

IMPACT FACTOR 6.20

ISSN 2250-169X

International Registered & Recognized

Research Journal Related to Higher Education for all Subjects

VISION RESEARCH REVIEW

UGC APPROVED, REFEREED & PEER REVIEWED RESEARCH JOURNAL

Issue - XX, Vol. - II

Year-X, Bi-Annual(Half Yearly)

(Dec. 2020 To May 2021)

Editorial Office :

'Gyandev-Parvati',
R-9/139/6-A-1,
Near Vishal School,
LIC Colony,
Pragati Nagar, Latur
Dist. Latur - 413531.
(Maharashtra), India.

Contact : 02382 -241913
9423346913 / 7276301000
9637935252 / 9503814000

E-mail :
interlinkresearch@rediffmail.com
visiongroup1994@ gmail.com
mbkamble2010@gmail.com

Published By :
Jyotichandra Publication
Latur, Dist. Latur - 413531. (M.S.)

Price : ₹ 200/-

CHIEF EDITOR

Dr. Balaji G. Kamble
Professor & Head,
Dept. of Economics,
Dr. Babasaheb Ambedkar College,
Latur, Dist. Latur. (M.S.)India.

SPECIAL EDITOR

Dr. E. Sivanagi Reddy
'Sthapathi'
Dept of Archaeology & Museums,
Hyderabad (A.P.)

EXECUTIVE EDITORS

Dr. Sachin Napate
Pune, Dist. Pune M.S.

Verena Blechinger Talcott
Director, Dept. of History
& Cultural Studies, University of Barlin.
Barlin. (Jermany)

Michael Strayss,
Director,
International Relation & Diplomacy,
Schiller International University,
Paris. (France)

Dr. Deelip S. Arjune
Professor, Head, Dept. of History
J. E. S. Mahavidyalaya,
Jalna, Dist. Jalna (M.S.)

Dr. Nilam Chhangani
Dept. of Economics,
S.K.N.G. College,
Karanja Lad, Dist. Washim(M.S.)

Dr. Rajendra R. Gawhale
Head, Dept. of Economics,
G. S. College,
Khamgaon, Dist. Buldana (M.S)

DEPUTY EDITORS

Dr. Rajendra Ganapure
Professor, Head, Dept. of Economics,
S. M. P. Mahavidyalaya,
Murum, Dist. Osmanabad (M.S.)

Dr. B. K. Shinde
Professor, Head, Dept. of Economics,
D. S. M. Mahavidyalaya,
Jintur, Dist. Parbhani (M.S.)

Dr. Vijay R. Gawhale
Head, Dept. of Commerce,
G.S. Mahavidyalaya,
Khamgaon, Dist. Buldana (M.S.)

Bhujang R. Bobade
Director, Manuscript Dept.,
Deccan Archaeological and Cultural
Research Institute, Hyderabad. (A.P.)

Dr. Mahadeo S. Kamble
Dept. of History
Vasant Mahavidyalaya,
Kaij, Dist. Beed (M.S.)

Dr. S. R. Patil
Professor, Dept. of Economics,
Swami Vivekanand Mahavidyalaya,
Shirur Tajband, Dist. Latur(M.S.)

CO - EDITORS

Dr. Allabaksha Jamadar
Professor, Head, Dept. of Hindi,
B.K.D. College,
Chakur, Dist. Latur (M.S.)

Dr. Murlidhar Lahade
Dept. of Hindi,
Janvikas Mahavidyalaya,
Bansarola, Dist. Beed.(M.S.)

Dr. Shyam Khandare
Dept. of Sociology,
Gondawana University,
Gadhciroli, Dist. Gadchiroli (M.S.)

Dr. M. Veeraprasad
Dept. of Political Science,
S.K. University,
Anantpur, Dist. Anantpur (A.P.)

Issue : XX, Vol. II
VISION RESEARCH REVIEW
IMPACT FACTOR 6.20
ISSN 2250-160X
Dec. 2020 To Dec. 2021

INDEX

Sr. No	Title for Research Paper	Page No.
1	A Correlation and Regression Analysis among the water Quality Parameters in Summer Season (Osmanabad District) **Mulla Jabbar Gulab**	1
2	A Study of Digital Banking in India **Dr. Kanhaiya B Patole, Suryakant R. Wakle**	5
3	Modern and Urban Families in Shobha De's Spouse **Madhuri J. Dhiware**	11
4	Library Automated Circulation System **Vikram V. Giri**	16
5	Effect of Six Week Yogic Exercise on Balance and Flexibility of Females **B. H. Jadhav**	26
6	Ultrasonic Velocities of Binary Liquid Mixtures using Scaled Particle Theory **Dr. K. N. Pande**	33
7	धूमिल के काव्य में जनवादी चेतना **डॉ. राजू शेख**	38
8	महापंडित राहूल सांकृत्यायन की यायावरी में बौद्ध धर्म **अमोल ज्ञानोबा लांडगे**	41
9	वाढती बेरोजगारी एक गंभीर समस्या **डॉ. माला पुंडलिकराव बारापात्रे**	45
10	बाबुराव बागूल यांच्या कथेतील स्त्री चित्रण **सोमनाथ व्यवहारे**	51
11	महात्मा बसवेश्वर यांचा अनुभवमंटप : प्रत्यक्ष लोकशाहीसाठीची संसद **डॉ. प्रकाश पानतावणे**	57

Scanned with CamScanner

Issue : XX, Vol. II
VISION RESEARCH REVIEW
IMPACT FACTOR 6.20
ISSN 2250-169X
Dec. 2020 To May 2021 41

8

महापंडित राहूल सांकृत्यायन की यायावरी में बौद्ध धर्म

अमोल ज्ञानोबा लांडगे
शोध छात्र,
लातूर, जि. लातूर

Research Paper - Hindi

महापंडित राहूल सांकृत्यायन एक युग परिवर्तनकामी साहित्यकार थे। राहूलजी ने सभी युवाओं को सदैव घूमने का मंत्र दिया। चरैवेति का सत्य ज्ञान प्राप्त कर अपने जीवन में उतारकर जीवन को गतिशील बनाने का कार्य राहूलजी ने किया। ज्ञान पिपासा और जिज्ञासा को मिटाने के लिए कभी न मिटानेवाली उर्जा लिए एक भाषा से दूसरी भाषा और एक जगह से दूसरी जगह बढते गए।

राहूलजी के माता-पिता का देहांत राहूलजी के बचपन में ही हुआ था। माता-पिता का स्नेह खो जाने के बाद उनका लालन-पालन उनकी नानी ने किया। राहूलजी का बाल-विवाह हुआ था। यही बाल विवाह ने राहूलजी के जीवन में निर्णायक भूमिका ले ली।

सन्यास रुप धारण कर गृहत्याग किया और सामाजिक विद्रोह का आरंभ किया। घर से भागे हुए केदारनाथ पांडे साधु रामउदार बन गए लेकिन सिर्फ साधु जीवन से ही राहूलजी को संतुष्टि नहीं मिली और वह उसे भी छोडकर आर्यसमाजी हो गए। आयु के १४ वर्ष की अवस्था में राहूल कलकत्ता भाग गए और वहीं से वे यायावरी की ओर आकृष्ट हुए। राहूल मन और आत्मा से पूरी तरह विरक्त हो गए और ज्ञान पिपासा से प्रेरित होकर भारत के कोने-कोने की यात्रा करने लगे। उम्र की १७-१८ वर्ष की अवस्था में राहूल आर्य समाज से मुक्त हो गए और उनका झुकाव बौद्ध धर्म की ओर हुआ।

बौद्ध धर्म में दिक्षा लेकर वे राहूल सांकृत्यायन बने। बौद्ध धर्म ने राहूल को पाली, अपभ्रंश, पाकृत, आदि भाषाओं को सीखने और उनका साहित्य जानने को प्रेरित किया। राहूल आदर्श साम्यवाद के सपने देखने लगे थे। १९१९ के जालियनवाला बाग के हत्याकांड ने उनके मन पर गहरा प्रभाव किया। विदेशी सत्ता के खिलाफ उनके मन में असंतोष निर्माण हुआ और इस असंतोष को शांत करने का परिणाम वह पकडे गए और जेल भेज दिए गए।

Scanned with CamScanner

राहूलजी किसान आंदोलन से जुडे और सक्रिय भी हो गए। बहोत बार जेल गए और पुलिस की मार भी खायी। राहूलजी आखिल भारतीय किसान महासभा के महासचिव बन गए। राहूलजी बहोत सारी आंदोलन में सरकार तथा व्यवस्था का विरोध करते रहे लेकिन वह विरोध सिर्फ साम्यवाद के लिए था। राहूलजी के ऊपर बौद्ध धर्म का गहरा प्रभाव पडा था।

राहूलजी ने तिब्बत की चार बार यात्रा की थी। राहुलजी वहाँ से बहोत सारा बौद्ध साहित्य लेकर आए राहूलजीने तिब्बत से लाया हुआ साहित्य आज भी पांडुलिपि में है। राहूलजी की यह चारों यात्रायें बहोत कष्टप्रद रही हैं।

"एल्मो गाँव अभी कुछ दूर रह गया था, तथी देवदारु वृक्षों का अनुपम हरित सौंदर्य दिखलाई देने लगा। अब यहाँ काठमांडो की तरह गरमी नहीं थी।"

राहूलजी १९२७-२८ में श्रीलंगा गए श्रीलंका के विश्वविद्यालय में (विद्यालंकार विहार) करीब १९ महिनों तक अध्यापन कार्य किया। पालि और बौद्ध साहित्य का गहन अध्ययन किया। राहूल को श्रीलंका में ही त्रिपिटकाचार्य की उपाधि से सम्मानित किया गया। भारत से जो संस्कृत बौद्ध साहित्य लुप्त हो रहा था उसे फिर से भारत लाने का कार्य किया। श्रीलंगा में राहूल भिक्षु बन गए।

"कांडी एक हरा-भरा पहाडी स्थान है इसके लिए जनु वसंत ऋतु रही लुगाई कहाजा सकता है।"

लंका में सबसे ऊँचे पर्वत पिदुरुतलगला जो भगवान बुद्घ के पद्चिन्ह से पावन हुआ था। यहाँ की यात्रा कर ऐतिहासिक साक्ष्य एकत्रित किए। लंका में सर्वाधिक संख्या बौद्ध लोगों की है। लेकिन जब पोर्तुगीजों का शासन था उस समय बौद्ध धर्म के उपर बडा संकट आया था। पोर्तुगीजों ने धर्म प्रसार के लिए बौद्ध मंदिर तथा बौद्ध भिक्षुओं को नष्ट किया। लंका में एक भी भिक्षु नही रहा तब राजा कीर्ति श्री ने बाहर से भिक्षु मँगवाकर नये सिरे से भिक्षु संघ की स्थापना की। आचार्य सुमंगल और उनके भाई धर्मालोक के बौद्धधर्म के कार्य का इतिहास राहूलजीने सामने लाने का कार्य किया।

राहूलजी १९३३ में लद्दाख गए जर्मन बौद्घ विद्वान गोविंद के साथ करीब ढाई महीने रहे। वहाँ पर उन्होंने भोजपत्रों पर लिखी हस्तलिपियों का अध्ययन किया। राहूलजी ने गंभीर लेखन कार्य कर भोट भाषा व्याकरण की पुस्तकें तैयार की और लेख भी लिखे।

राहुल सांकृत्यायनजी ने चीन यात्रा में भी प्रचुर मात्रा में बौद्ध धर्म का अध्यायन कर साहित्य संचय किया। चीनी भिक्षु ने अपनी अलग संस्कृति का निर्माण किया। चीनी भिक्षुओं ने सैंकडो भोजन प्रकारों का अविष्कार किया चीनी भिक्षु कट्टर निरामिषाहारी है। भिक्षुओं ने रंधन को कला का रुप दिया। बौद्ध संस्थान शिक्षा का महाविद्यालय तथा बौद्ध महासंघ में भाषण के साथ-

साथ लामा विहार की यात्रा की। विशाल विहार तथा प्राचीन बुद्ध मुर्तियों के साथ उसके इतिहास का अध्ययन किया। १४ वीं सदी के पंचस्तूप विहार का अध्ययन किया। राहूलजी हमेशा यह प्रयासरत रहें की भ्रमण कर इतिहास का वास्तविक ज्ञान प्राप्त कर सच्चाई सामने आये ताकि समस्त लोग सच्चाई से परिचित हो। राहुलजी चीन में श्री यू से मिले जो इतिहासकार थे। इनके साथ मिलकर बहोत से संग्रहालय की यात्रा की। चीन की कला पर बौद्ध धर्म का प्रभाव है। बहोतसी बुद्ध मूर्तियाँ देखी। शिनू-काऊ और नी-च्वेन जगह की विहार की यात्रा में विशालकाय विहार उसकी जमीन, बहोत बडी लायब्रेरी और चीनी भाषा में सुरक्षित बौद्ध साहित्य को भारतीय भाषा में लाने का कार्य शुरु किया। राहुलजीने अपने चीन यात्रा में बहोतसी जगह की यात्रा की और बौद्ध धर्म तथा साहित्य का अध्ययन कर ज्ञान का धरोहर भारत ले आये।

राहुलजी की जपान यात्रा भी बहोत चर्चित रही। जपान यात्रा में राहूलजीने जपान के साथ-साथ आस-पास के देश और प्रदेश का भी वर्णन किया है। राहुलजी की जपान यात्रा १९३५ में हुई। इस यात्रा में बौद्ध धर्म के साथ-साथ सांस्कृतिक, साहित्यिक, ऐतिहासिक, संस्कृति का भी परिचय देने का प्रयास किया है।

राहूलजी ५ मई १९३५ को जपान पहुँचने के बाद दूसरे दिन जपान के प्रथम बौद्धमठ होर्योजी गये। इसी बौद्ध मंदिर से जपान ने अपने सभ्यता का आरंभ किया। इस मंदिर का निर्माण राजा शोतोकू ने इ.स. ५८६-८७ में किया था। सबसे पुरानी लकडी से बना यह मंदिर जपान के कला, विज्ञान धर्म का प्रतिक है। राजा शोतकू ने बौद्ध धर्म को राजधर्म घोषित किया था। राहुलजी इस मंदिर के बारे में पर्याप्त अध्ययन कर प्रचूर मात्रा में साहित्य सृजन किया। राहुलजी इस मंदिर के बारे में पर्याप्त अध्ययन कर प्रचूर मात्रा में साहित्य सृजन किया। राहुलजीने वहाँ के ११२ फीट ऊँटे स्तूप का अध्ययन किया जिसमें गौतम बुद्ध संम्बधी दृश्य अंकित किये हुए है। आस-पास के दो-तीन पूराने मंदिर का भी अध्ययन किया। वहाँ एक भिक्षुणियों का विहार है। उसमें बोधिसत्व अवलोकितेश्वर की सुन्दर काष्ट-प्रतिमा है। चिन्तामग्न बोधिसत्व के दर्शन कर उसके इतिहास का अमूल्य भंडार राहुलजी ने प्राप्त किया। जपान के रोम-रोम में बौद्ध बसा हुआ है। जपान के छोटे से छोटे गाँव में भी कम से कम ५-६ बौद्ध मंदिर मिलते है। जपान में लग-भग ८५ से ९० हजार बौद्ध मंदिर है। यहाँ की कुल आबादी के ८५ % लोग बौद्ध है। इसीलिए राहूल सांकृत्यायनजी ने जपान भ्रमण कर प्रचुर मात्रा में बौद्ध अध्ययन किया।

राहुल सांस्कृत्यायनजी ने रशिया में पच्चीस माह निवास किया है। रुस की विश्वविद्यालय में राहूलजीने संस्कृत, तिब्बती और हिंदी का अध्यायन कार्य किया। प्रचुर मात्रा में रुस में रहने पर वहाँ उन्होने अध्यापन के साथ-साथ अध्ययन का कार्य भी किया। रुस में बौद्ध धम्म को उतना राजाश्रय नहीं मिला जितने की आवश्यकता थी। रुस में लेनिनग्राद में अवस्थित रुपमें बौद्ध मंदिर

Scanned with CamScanner

के अवशेष मिले। मंदिर की इमारत मजबूत पत्थरों से तिब्बती ढंग की बनी हुई थी। मंदिर की मुल्यवान मुर्तियाँ संग्रहालयमें सुरक्षित रखी गयी थी। राहुलजीने रुस में अन्य एक जगह की खोज कर वहाँ स्थित बौद्ध अवशेष का अध्ययन किया। रुस के सप्तनद के आस-पास के प्रदेश में छटी सदी से लेकर बारहवीं सदी तक के बौद्ध अवशेष मिले। बारहवीं शताब्दी तक का बौद्ध निवास, बौद्ध भित्तिचित्र, बुद्ध की मुर्तियाँ, ८ वीं सदी की बौद्ध की पीतल की मूर्ति के प्रमाण, अभिलेख आदि की खोज कर राहुलजीने अध्ययन कार्य कर उसे साहित्य तथा इतिहास का रुप देने का कार्य किया।

राहुल सांस्कृत्यायनजीने ज्यादातर यात्राएँ हिमालय या पर्वतजन्य प्रदेशों की कि है। इससे राहुलजी का हिमालय के प्रति आकर्षण दिखाई देता है। राहुलजी की ज्यादात्तर यात्राएँ धार्मिक, ऐतिहासिक अध्ययन को लेकर होती थी। इन सभी यात्राओं में राहुलजी ने विभिन्न देशों में व्याप्त धार्मिकता, ऐतिहासिकता तथा सांस्कृतिक साम्यता का अध्ययन कर उसका यात्रा वर्णन के आधार पर साहित्य सृजन करने का कार्य किया।

राहुलजी के विचारों पर बौद्ध तत्वज्ञान का गहरा प्रभाव होने के कारण राहूलजी विश्वभर में व्याप्त बौद्ध साहित्य, इतिहास, तत्वज्ञान तथा उससे जूडी सामग्री प्राप्त करने का विचार कर विभिन्न जगहों पर बिखरे हुए बौद्ध विचार सामग्री को एक जगह लाने का महान कार्य किया हुआ दिखाई देता है। इसीलिए राहूलजी को महापंडित तथा बौद्ध विचार और सामग्री के संग्राहक भी कहा जाता है।

CS Scanned with CamScanner